© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
International Journal of Scientific Research in Science and Technology

हिन्दू धर्म में अशुभ की समस्या और उसका समाधान

मो0 असलम
शोध–छात्र
दर्शनशास्त्र विभाग
राजनारायण महाविद्यालय
हाजीपुर।

हिन्दू धर्म सनातन धर्म है, क्योंकि यह एक विचारधारा है जो निरन्तर प्रवाहमान रही है, फिर भी ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो विश्व में जितने भी जीवित धर्म हैं उनमें हिन्दू धर्म सबसे प्राचीन माना जाता है। जहाँ तक इसके नामकरण का प्रश्न है, कहा जाता है कि हिन्दू नाम सिन्धु नदी के नाम पर आधारित है। सिन्धु को अंग्रेजी में इण्डस (Indus) कहा गया है। पारसियों तथा पाश्चात्य आक्रमणकों के द्वारा गलत उच्चारण के कारण इण्डस से हिन्दूज (Hindus) हो गया।[1] मुसलमानों को यह शब्द फारस अर्थात् ईरान से मिला था। फारसी कोशों में हिन्द और ईश से व्युत्पन्न अनेक शब्द पाये जाते हैं, जैसे – हिन्दू, हिन्दी, हिन्दवी आदि। इस शब्द के अस्तित्व से स्पष्ट है कि हिन्द शब्द मूलतः फारसी है और इसका अर्थ भारतवर्ष है।[2]

कहा जाता है कि शुभ का अभाव ही अशुभ है। लेकिन देखा जाए तो दुःख की जितनी भी प्रवृत्तियाँ हैं वे सभी अशुभ की श्रेणी में आती हैं। अशुभ मनुष्य के दुःखों का मूल कारण है। अशुभ की बहुलता के कारण ही जीव–जन्तुओं का जीवन दुःखात्मक प्रतीत होता है। बाढ़, भूकम्प जैसी प्राकृतिक घटनाओं से जीव–जन्तुओं को हानि पहुँचती है। अतः प्राकृतिक घटनाओं को भी अशुभ कहना न्यायसंगत है। प्रकृति के अतिरिक्त कुछ दुष्ट मनुष्यों के कर्मों से अशुभ की उत्पत्ति होती है, जैसे – चोरी, डकैती, हिंसा, धोखा आदि। प्रो0 डी0एम0 एडवर्ड ने अशुभ को परम मूल्यों का विरोधी माना है। उनका मानना है कि विश्व में कम से कम चार प्रकार के अशुभ निहित हैं – दुःख, असत्य, कुरूपता और पाप – ये चार परम मूल्यों सुख, सत्य, सौन्दर्य और शुभ के विरोधी हैं।[3] इसी प्रकार मेक्टागर्ट ने अशुभ की व्यापकता को स्वीकार करते हुए कहा है कि – "विश्व में अशुभ की सत्ता है इसमें कोई संदेह नहीं है।"[4]

विश्व में यदि शुभ है तो अशुभ की सत्ता का होना स्वाभाविक है। लेकिन शुभ–अशुभ की प्राप्ति मनुष्य को उसके कर्मों के आधार पर होती है। इसमें कोई शक नहीं है कि हिन्दू मान्यता में जीवन को दुःखमय माना गया है, लेकिन इसका यह अभिप्राय नहीं है कि जीवन में सुख है ही नहीं। यदि एन्द्रिय सुख एवं बौद्धिक सुख न हो तो जीवन की लालसा ही नहीं होती।

हिन्दू मान्यता में मानव स्वयं ही अपने भाग्य का विधाता है। वह स्वयं अपने अनैतिक आचरण द्वारा अशुभ को अपने जीवन में आमंत्रित करता है। वह शुभ और अशुभ का चयन करने के लिए स्वतंत्र है। अद्वैतवादी मानते हैं कि यदि साधक ईश्वरोपासना करे तो ईश्वर कृपा से ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति हो सकती है और अशुभ से छुटकारा मिल सकता है। मानव ईश्वर का अंश है। मानव जब अपने अन्तर्निहित सत्य को जान लेता है तो वह सारे विश्व के मूल सत्य का ज्ञान जानने में समर्थ हो जाता है। धार्मिक जगत में ईश्वर की सत्ता को इस सृष्टि के निमित्त कारण के रूप में स्वीकार किया गया है।

अब प्रश्न उठता है कि जब ईश्वर ही जगत के उत्पत्ति का कारण है तो फिर अशुभ की उत्पत्ति का कारण भी वही होगा। ये काफी विवेचना का प्रश्न है लेकिन फिर भी इतना कहा जा सकता है कि यदि हम शुभ की सत्ता स्वीकार करते हैं तो हमें अशुभ की सत्ता स्वीकार करनी पड़ेगी। साथ ही हम इस बात से भी इंकार नहीं कर सकते है कि अशुभ की सत्ता से हम मुक्त भी नहीं हो सकते, जब तक जीवन है। आदिकाल से शुभ प्राप्ति के प्रयास में जुझता मानव आज भी बाढ़, भूकम्प, महावृष्टि, अनावृष्टि, शोक, संताप, बीमारी, महामारी, सर्प, बाघ आदि के चंगुल से मुक्त नहीं हो पाया है। यह एक विवादित तथ्य है, यदि ईश्वरवादियों ने इससे मुक्त होने के उपायों पर विचार किया है,

तथापि ज्यों–ज्यों हम ईश्वर को प्रेम, शुभ और सर्वशक्तिमान सत्ता के रूप में प्रतिष्ठत करते हैं, त्यों–त्यों अशुभ की समस्या जटिल और गंभीर होती जाती है।

हिन्दू मान्यता के अनुसार अशुभ का अस्तित्व नहीं है, क्योंकि वह अज्ञान का परिणाम है। ईश्वर परम शुभ है और ईश्वर द्वारा सृष्ट विश्व की सारी घटनाएँ शुभपरक सिद्ध होती है। अशुभ आंशिक अथवा अपूर्ण दृष्टि का प्रतिफल है। बाढ़, बीमारी और भूकम्प को यदि विश्व के संपूर्णत्व में देखा जाए तो वे शुभ प्रतीत होते हैं।

संदर्भ–सूची :

1. Radhakrishnan, S. The Hindu View of Life, P-13
2. हिन्दू धर्म कोश, डॉ0 राजबली पाण्डेय, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, पृ0–702.
3. Edwards, D.M., The Philosophy of Religion, P-239
4. Mctaggart, Why God Must Be Finite (Paper), Approaches to the philosophy of religion, edited by Bronstein and Schulweis, P-277.